International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 1482-1483

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 1482-1483
www.allresearchjournal.com
Received: 05-05-2017
Accepted: 07-06-2017

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

ओमकारनाथ ठाकुर का भारतीय संगीत को योगदान

डॉ. रंजना ग्रेवर

सारांश
अमूल्य रत्नों से परिपूर्ण जाज्वल्यमान भारत वसंधुरा का आंचल कितना सौभाग्यशाली, कितना पवित्र और कितना अनोखा है, यह किसी से छिपा नहीं है। यह रत्नमयो भारतभूमि अपने अंतरण में जहां असंख्य मणि–मुक्ताएं छिपाए बैठी है, वहीं इसके आंचल में समय समय पर ऐसे रत्न भी पैदा हुए, जिन्होंने अपनी तपस्या, सृजनात्मक क्षमता एवं परम्परागत कला की कठोर तपस्या के बल पर भारत की समृद्ध संस्कृति अक्षुण बनाए रखने तथा उसके वैविध्यपूर्ण स्वरूपों को नित नवीन विधि से संवारने, सजाने एवं जन–जन के समक्ष उसे सी रूप में प्रस्तुत कर जनता को असीम आन्नद सौन्दर्य का वाध कगर्न में अपना सर्वस्व अपति कर दिया। उन्ही महान् पुरूषों में है 'मंगोतमातंड', पद्मश्री पं. ओमकारनाथ ठाकुर, जिनका नाम संगीताकाश में 'मार्तड' की भांति आज भी देदीप्यमान है।

कूटशब्द : संगीत, आंचल, सृजनात्मकता, वैविध्यपूर्ण

प्रस्तावना
24 जून, 1897 को गुजरात राज्य के जिला भादरान के जहाजग्राम के प्रणव–साधक पं. गौरीशंकर ठाकुर के यहां जन्में बालक ओम्कारनाथ के जीवन का प्रारम्भिक काल जहां संघर्षमय वातावरण में व्यतीत हुआ, जिससे वह स्वावलंबी बने, वहीं यागी प्रणव साधक पिता श्री का प्रभाव पंडित जी के जीवन पर पड़ा जिससे श्प्रणवश उनके समस्त जीवन का आधार एवं प्रेरणा बन गया। पं. विष्णुदिंगबर पलुस्कर के शिष्यत्व में गुरूकुल–परम्परा में कड़ी मेहनत एवं लगन और श्रद्वा के साथ शिक्षा प्राप्त कर पंडित जी ने भारतीय संगीत का विभिनन पहलुओं में प्राचीनतम गौरव, आधुनिक परिश्य में प्रस्तुत एवं प्रतिष्ठित किया

पंडित जी में एक कलाकार के रूप में अपने गायन में गंभीर आलापचारी, वक्र और कट एवं क्लिष्ट तानों का प्रयोग स्वर संयोग, स्वर भेद, उच्चारण भेद, काकु भेद आदि में एक ही शब्द के अनेक अर्थों का प्रयोग करना, इनके साथ साथ आजाद भावुकता आदि विशिष्टताओं का (गायन में) प्रयुक्त कर गायन की एक स्वतंत्र शैली का संगीत श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया। यह उनका साहस कर्म ही कहकर पुकारा जायेगा। जब उन्होंने इटली के डिक्टेटर मुसोलिनी को पूरिया (कोमल व सला दिया था। यह उनकी विलक्षण प्रतिभा का और उनके संगीत की निराली शक्ति का प्रदर्षन था। पौधो– पत्तों पर संगीत का प्रभाव पड़ने का प्रयोग भी विज्ञान की प्रयोगशाला के किसी कौतुक से कम आश्चर्यजनक बात नहीं थी। इस घटना का उल्लेख करते हुए 'संगीत–निबंधावली' में लिखा है कि पं. ओमकारनाथ ठाकुर ने एक और नई खोज संगीत संसार के सामने रखी कि संगीत द्वारा पौधों व पतों के प्रोटोप्लाज्म के कोष में संयत 'कलोरोलाज्म' विचलित और गतिमान हो उठता है। उन्होंने लोगों को बताया कि वह अपनी प्रयोगशाला में स्वरों का सूक्ष्म अध्ययन करके इस तथ्य पर पहुंचे है कि फलों पत्तों और पौधों पर भी मधुर गायन के स्वरों का अलग अलग प्रभाव पड़ता है। सर जे.सी. बोस ने वनस्पति शास्त्र संबन्धी विशेष अनुसंधान पर प्रमाणित कर दिया था कि वनस्पति में भी जीव है। पंडित जी ने उनकी प्रयोगशाला में जाकर भैरवी गाई थी। गाने से पूर्व यंत्रों द्वारा पौधों व पतों की अवस्था देख ली गई थी और गायन के पश्चात उन पर आई हुई नई चमक का दर्शन भी लोगों ने किया था।

पंडित जी राग–निर्माता के साथ साथ रागों के द्रष्टा भी थे। राग में प्रयुक्त स्वरों द्वारा निर्मित राग का स्वरूप तथा उस स्वरूप. को भावपूर्ण शैली से प्रस्तुत करना ही गायक का परम लक्ष्य होना चाहिए। भारतीय संगीत का प्रचार एवं प्रसार पंडित जी के जीवन का मुख्य लक्ष्य था, जिसे उन्होंने अपनी असामान्य प्रतिभा के बल पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति के शिखर पर पहुंचाया। वे भारतीय संगीत का इतना ऊंचा शिखर बनाना चाहते थे कि वह संसार के किसी भी कोने से दिखाई पड़ सके।

उनके अकथनीय प्रयत्नों के फलस्वरूप ही भारतीय समाज में संगीत की गरिमा बढ़ी, उनका प्रचार प्रसार हुआ, कलाकारों का वर्ग राष्ट्र के प्रति उतरादायी बना, उन्हें समाज में उचित स्थान प्राप्त

हुआ। साथ साथ पाश्चात्य जनता न केवल भारतीय संगीत की ओर आकृष्ट हुई, अपितु उसने उसकी अंतरात्मा को पहचानकर उसे अपनाने का भी प्रयत्न किया।

जहां एक शिक्षक के रूप में पंडित जी ने भारतीय संगीत जगत को अपनी कला के उतरदायी शिष्य के रूप में अनेक कुशल संगीतज्ञ प्रदान किए, जिनमें पर डॉ. प्रेमलता शर्मा (पूर्व उप–कुलपति, खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय), डॉ. एन. राजा (अध्यक्षा संगीत शास्त्र विभाग, काशी हिन्दी विश्वविद्यालय वाराणसी), पं. बलवंत राय भटट. डॉ. प्रदीप कुमार दीक्षित आदि, वही शिक्षाकार प्रशासक और संगठनकर्ता के रूप में महामना मदनमोहन मालवीय के सुपुत्र श्री गोविन्द मालवीय के सहयोग से सन 1950 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में श्री कला संगीत भारतीश संगीत महाविद्यालय स्थापित करवाया जा भारत का सर्वप्रथम महाविद्यालय है, जहां संगीत के गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों विद्याओं में स्नातक स्तर तक तथा स्नातकोत्तर एवं शोध–प्रबन्धन शिक्षा देने की व्यवस्था है।

पंडित जी द्वारा लिखित संगीत ग्रन्थों का अध्ययन करने से यह सहज ही स्पष्ट होता है कि मध्ययुग की सबसे बड़ी विडम्बन, संगीत के क्रिया एवं शास्त्र पक्ष के बीच। हुई चौड़ी खाई को दूर करने में वे पर्याप्त रूप से सफल हुए। उनके संगीत ग्रंथ 'संगीतांजलि' (छह भागों में), 'प्रणव भारती और राग अने रस' (गुजराती भाषा में) इस बात के साक्षी है कि क्रिया और शास्त्र पक्ष की खाई को पाटने का सत्प्रयास उन्होंने किया।

एक विशिष्ट वाग्गेयकार के रूप में ओम्कारनाथ ही नहीं, 'प्रणवरंग' की विशिष्टता उन्हें अभिप्रेत थी। श्सदारंग और 'अदारंग' की भांति 'प्रणवरंग' उपनाम से उन्होंने अनेक छंदों में काव्य रचना करके विभिन्न रागों में बंदिशों का निर्माण किया जो उनकी संगीतांजलि (छह रू में) में हमें प्राप्त है।

15 अगस्त 1947 को तत्कालीन गृह मंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल ने पंडित जी के द्वारा ही राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम' (पूरा गीत) को आकाशवाणी के तत्कालीन सभी केन्द्रों से प्रसारित करवाया था। सन 1955 में पंडित जी को संगीत के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिए भारत सरकार की ओर से 'पदम्श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके साथ साथ दिसम्बर 1963 में पंडित जी को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस 1964 में रवीन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय, कलकता द्वारा श्डी–लिट्.श की मानार्ह उपाधियों से अलंकृत किया गया।

लगभग पचास वर्षों तक संगीत की विशेष सेवा करने वाले 'पदमश्रीश प. आमकारनाथ ठाकुर का लगभग दो वर्ष की लम्बी बिमारी के बाद 29 दिसम्बर 1967 को गत्रि रू बजे निधन हो गया। संगीत के साधक और उसके रसिकों के लिए यह अपूर्णीय थी। वे अब उनसे साक्षात् ओर अधिक प्राप्त क्या कर सकेंगे। हां, उनकी जो कृति शास्त्रों और रिकार्डो के रूप में विद्यमान है, वह उनके लिए करूणा स्मृति होते हुए भी आशा और प्रेरणा का कार्य करेगी।

भारतीय संगीत को पं. ओम्कारनाथ ठाकुर ने जो अतुलनीय योगदान दिया, भारतीय संगीत का जा प्रतिष्ठा उन्होंने दिलवाई है, वह अविचल बनी रहे तथा नित वृद्धि विकास, हो, एसो शुभ भावना, मंगल कामना तथा पुनीत प्रार्थना के साथ ही यह श्रद्धांजति उन्हें समर्पित है।

संदर्भ

1. सुशीला मिश्रा : 'ग्रेट मास्टर्स ऑफ इण्डियन म्यूजिक', पृ. 142
2. लक्ष्मी नारायण गर्ग : 'संगीत–निबंधावली', पृ. 25–27
3. सुषील चौबेः हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न, पृ. 72–73